"गोस्वामी तुलसीदास एवं संत एकनाथ के साहित्य के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण चेतना"

डॉ. सागर रघुनाथ कांबळे
श्री. शिव-शाहू महाविद्यालय,
सरूड
दूरभाष-9545330761
ई-मेल- sagarkam24@gmail.com

शोध सारांश :

मानव एवं पर्यावरण का घनिष्ठ संबंध है। जब से जीव का इस सृष्टि में जन्म हुआ है, तभी से उसका संबंध पर्यावरण से जुड गया है। पर्यावरण सजीव तथा निर्जीव घटकों से बना हैं। भारतीय संस्कृति में वन और वनस्पति का बहुत अधिक महत्व रहा है। ऋषि-मुनि वनों में रहकर ही तप साधना करते थे। प्रकृति से उनका संबंध घनिष्ठ था। वैदिक ऋचाओं का निर्माण भी वनों में हुआ था। मानव, वन्य, जीव, जंतु, वृक्ष, पर्वत, सरिताएँ, ऋतुएँ आदि सभी परस्पर एक दुसरे से जुडे है तथा पर्यावरण के अभिन्न अंग है। वेद, उपनिषद, पुराण, सूत्र ग्रंथ आदि का निर्माण भी वनों में ही हुआ है।

बीज शब्द : पर्यावरण, चेतना आदि।

भूमिका :

आज समूचा विश्व पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं से बाधित होकर चिंताग्रस्त बना है। इसका कारण मनुष्य की बढती आकांक्षाएँ तथा अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए आसूरी स्वार्थवृत्ति है। मानव समाज की अधिकांश समस्याएँ मानसिक विकृति से संबंधित है और इसका मुख्य कारण बौद्धिक कालुष्य एवं प्राकृतिक विकृतियाँ और प्रदूषित वातावरण है। प्राकृतिक संपदाओं का अत्याधिक दोहन एवं उनके प्रदूषण से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई है और हो रही है। परिणामत: अनियमित बरसात, अकाल, बर्फवृष्टि, बाढ का प्रकोप, ओझोन क्षरण आदि के कारण समस्याओं से बढोत्तरी हो रही है। आज के समय की पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित समस्याओं के निराकरण एवं समाधान में रामचरितमानस और भावार्थ रामायण में उल्लेखित चिंतन महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक है। तुलसीदास एवं एकनाथ ने अपनी रचनाओं में प्राकृतिक पर्यावरण की विशुद्धता एवं मानव अंत:करण की पवित्रता का विस्तृत वर्णन किया है। उनके कथानायक श्रीराम प्रकृति के संरक्षक है।

पर्यावरण अर्थ, परिभाषा :

'पर्यावरण' शब्द अंग्रेजी के Environment शब्द का पर्यायी हिंदी शब्द है। इसका अर्थ Surrounding अर्थात घेराव, पडौस, चारों ओर का प्रदेष या स्थान है।

पर्यावरण का अर्थ- सब ओर से ढकना, घेरा डालना, व्याप्त होना आदि है।" भारतीय समाज और मनीषियों ने पर्यावरण को मानव जीवन का अविभाज्य अंग स्वीकार किया है। वेद, उपनिषद, पुराणों से लेकर आधुनिक काल तक ऋषि, संत एवं विद्वानों ने पर्यावरण चेतना को लेकर समाज को सजग करने का प्रयास किया है। प्रकृति की रक्षा में ही मानव की सुरक्षा है प्रतिपादित करते हुए वैदिक साहित्य में प्रकृति की रक्षा का संदेश दिया गया है।

पाश्चात्य पर्यावरणीय अवधारणा में प्रकृति, उसके बाह्य अंग और तत्संबंधी क्रियाएँ सम्मिलित है; जब कि भारतीय पर्यावरण अवधारणा में भारतीय चिंतन, भारतीय संस्कृति एवं भारतीय अध्यात्म भी सम्मिलित है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस की कथा के माध्यम से पर्यावरण के दो रूपों- प्राकृतिक पर्यावरण और मानसिक पर्यावरण के विशुद्ध एवं प्रदूषित पक्षों को परिभाषित किया है। एकनाथ ने भावार्थ रामायण में प्रकृति का वर्णन तीन रूपों में किया है-पहला प्रकृति का वर्णनात्मकदर्षन, दूसरा उपमा, रूपकों में चित्रित प्रकृति और तीसरा रसभाव में प्रकृति चित्रण आदि। भावार्थ रामायण ग्रंथ के आरंभ से अंत तक प्रकृति का चित्रण हुआ है। एकनाथ महाराज ने प्रकृति सौंदर्य का प्रभाव इन्हीं शब्दों में व्यक्त किया है-

"वृंदावने सुमनवने। शोभतील वने उपवनें।
बिल्ब अश्वत्थ मधुबनें। आम्रवनें मधमधित।
पंचपंच वृक्षाची दाटी। गंगातीरी निकटा निकटी।
त्यांमाजी शोभे पंचवटी। देखता दृष्टि मन निवे।"

अर्थात वृदांवन की भाँति पंचवटी में अनेक वन, उपवन हैं। यहाँ मधुर फलों से पेड लद गए है और आम के पेड भी फलों के कारण झूक गए है। पाँच-पाँच प्रकार के पेड नदी के तट पर फलों से भर गए हैं।

रामचरितमानस में श्रीराम को विष्णु का अवतार रूप बताया है, जो प्रकृति के पंचतत्त्वों-क्षति, जल, पावक, गगन और समीर से बने हुए है। जैसे-

"क्षिति जल पावक गगन समीरा। पच्च रचितअसि अधम सरीरा।"

वनगमन के समय प्रकृति ने राम, लक्ष्मण और सीता को अपना प्रसन्न सान्निध्य देकर उन्हें कष्ट नहीं पहुँचाया था। जैसे-

"जब ते आइ रहे रघुनायक। तब ते भयउ बनु मंगलदायक।
फूलहिं फलहिं विपट विधि नाना। मंजु बलित वर बेलि विताना।"

जनकपुर नगरी में प्राकृतिक पर्यावरण की समृद्धि के समस्त साधन स्वच्छ, संपन्न एवं दर्शनीय थे। जैसे- अर्थात अरूणा, वरूणा के संगम पर मानो सरस्वती आ गई हैं। इन नदियों का सुंदर जल श्रीराम को अच्छा लगा था।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में निर्मल जल की धारा प्रवाहित होनेवाली अनेक नदियाँ, कूपों, तडागों, झीलों के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है। जैसे-

"सरिता सब पुनीत जलु बहहीं, खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं।"

रामचरितमानस में गंगा, यमुना, सरयु, मंदाकिनी, गोदावरी आदि नदियों का उल्लेख किया है, ये सभी विशुद्ध जल प्रदान करती है। भावार्थ रामायण में उल्लेख आया है कि दंडकारण्य में अनेक वर्षों तक अकाल पडने से भयानकता फैल गयी थी। अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसया के प्रयत्नों से वहाँ पुन:वैभव प्राप्त हुआ था। जैसे-अर्थात कैलास पर्वत के निकट हेमाद्रि और उत्तर दिशा के द्रोणाद्रि पर्वतों पर दिव्य औषधियाँ प्रचुर मात्रा में थी। वे अपनी तेजस्विता एवं प्रभावता के कारण प्रकाशमान हो रही थी। हनुमान उचित औषधी को पहचानने में दिक्कत आने से उसने पर्वत को ही उठाकर लाया था। यही वर्णन रामचरितमानस में भी आया है।

रामायण में भी प्रदूषणरहित एवं पवित्र निर्मल आकाश सर्वत्र दिखाई देता है। नगरों के साथ गाँवों में भी स्वच्छ वायु प्रवहण से वातावरण सुरम्य होने का वर्णन दिखाई देता है। रामचरितमानस और भावार्थ रामायण में वर्णित निर्गल, सुगंधित वायु प्रवहण आज के समाज जीवन को वायु प्रदूषण से बचने के लिए उपदेषक एवं निर्देष प्रदान करती है। प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण के उपायों में राज्य व्दारा वृक्षों को लगाना, संवर्धित करना, सुरक्षा करना, जल को संरक्षित करना, उसकी पवित्रता बनाएँ रखना, नदियों पर घाट बनाना, कूपों का निर्माण एवं संरक्षण, पशु-पक्षियों का पश्रय देना, नगरों, ग्रामों में स्वच्छता संबंधी कार्यों को प्रधानता थी।

रामचरितमानस और भावार्थ रामायण में आर्य, वानर तथा राक्षस आदि सभी राजाओं के राज्यों में प्रकृति की प्रफुल्लता एवं उनके संरक्षण की व्यवस्था थी। राजा सुग्रीव के राज्य में मधुबन का संरक्षण राज्य की ओर से था। उसमें बहुत से रक्षक उसकी रखवाली करते थे। इस वाटिका को हानी पहुँचाना अपराध समझा जाता था। हनुमान ने लंका में स्थित बगिचे का नुकसान करने के कारण रावण ने उसे दंड देने का प्रयास किया था। राक्षस राजागण यद्यपि प्रकृति के संरक्षण के प्रति उदार थे।

निष्कर्ष

आज प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण बढती आबादी और उसकी अवास्तव आकांक्षाएँ या भौतिक अभिलाषाएँ हैं। रामचरितमानस और भावार्थ रामायण में वर्णित व्यवस्थित समाज, प्रकृति प्रेम, अनुषासित प्रशासन एवं संयमित प्रजा, सद्शिक्षा, सुसंस्कार, निस्वार्थ भावना, कर्तव्यनिष्ठा आदि को सहज एवं स्वाभाविक उपस्थिति के कारण पर्यावरण प्रदूषण के समाज कौसो दूर था। आज के बढती पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या से मुक्ति पाने का पवित्र एवं अनुकरणीय रास्ता ग्रंथों में मिलता है, जिसका हमें अनुपालन करना अत्यावश्यक है।

संदर्भ-

1) संस्कृत हिंदी कोष- डॉ. वामन शिवराम आपटे पृ. 968.
2) वैदिक संस्कृति और पर्यावरण-संरक्षण-डॉ. विजय एस. सोजित्रा पृ. 8.
3) अथर्ववेद- 12-1-12.